हुआ, दारोगा आ रहा है । इस्कूल के हाता से एक टोपावाला और चार-पाँच लाल पगड़ीवाला निकला ! बस, फिर क्या था, जिंदा बाघ आ गया; जो जिस मुँह से खड़ा था, उधर ही भागा । एक-दूसरे के ऊपर गिर रहा है । कहाँ झंडा, कहाँ पत्तखा और कहाँ इनकिलास जिंदाबाघ ! दारोगा साहब तैवारी को पकड़कर ले गए । इसके बाद गाँव के घर-घर में घुसकर खन्ना-तलासी ! गाँव के सभी जिंदाबाघ माँद में घुस गए । सुनने में आया कि जब कंगरेसी राज हुआ तो फिर घर-घर में भोलटियर घरघराने लगा । फिर इनकिलास जिंदाबाघ ! पुलिस-दारोगा को देखकर और जोर से चिल्लाते थे सब । लो भाई, चिल्लाओ, तुम्हारा राज है अभी ! पुलिस-दारोगा मन-ही-मन गुस्सा पीकर रह गए । पिछले मोमेंट में जिंदाबाघों ने जोस में आकर अड़गड़ा जला दिया, कलाली लूट लिया । दूसरे ही दिन चार लौरी में भरके गोरा मलेटरी आया और सारे गाँव में जला-पका, लूट-पीटकर एक ही घंटा में ठंडा कर दिया । पचास आदमी को गिरिफ्फ किया । दो को तो मारते-मारते बेहोस कर दिया । एक को कीरीच भोंक दिया । अंग्रेज बहादुर से यही दुग्गी-तिग्गी लोग पार पाएँगे । बड़ा-बड़ा घोड़ा बहा जाए तो नटघोड़ी पूछे कितना पानी । अंग्रेज बहादुर ने अभी फिर ढील दे दिया । सब उछल-कूद रहे हैं । इस बार बिगड़ेगा तो खोपसहित कबूतराय ··· ।"

"नहीं जोतखी काका, अब वैसा नहीं हो सकता," बालदेव इससे आगे नहीं सुन सका, "पिछले मोमेंट में सरकार का छक्का छूट गया है । सिमरबनी के बारे में आप जो कह रहे हैं सो आप इधर सिमरबनी गए हैं ? नहीं । तब क्या देखिएगा ! एक बार वहाँ जाकर देखिए—इसपिताल, इस्कूल, लड़की-इस्कूल, चरखा सेंटर, रायबरेली[1], क्या नहीं है वहाँ ? घर-घर में ए-बी-सी-डी पास ! सिवानंदबाबू को जानते हैं ? उनका बेटा रमानंद हम लोगों के साथ जेहल में था; अब हाकिम हो जाएगा । पक्की बात !"

खेलावन भी कुछ कहना चाहता था कि चरवाहे ने पुकारा, "पाँड़ा भैंस पी रहा है ।"

खेलावन भैंस दुहने चला गया । बालदेव के पास बेकार बहस करने के लिए समय नहीं है । गाँव में जय-जयकार हो रहा है—'गन्ही महतमा की जै !'

1. लायब्रेरी ।

सात

प्यारू को सबों ने चारों ओर से घेर लिया । डागडर साहेब का नौकर है । डागडर साहेब कब तक आएँगे ? तुम्हारा क्या नाम है ? कौन जात है ? दुसाध मत कहो, गहलोत बोलो गहलोत ! जनेऊ नहीं है ?

बालदेव जी प्यारू को भीड़ से बाहर ले आते हैं । "भाई, तुम लोगों ने आदमी नहीं देखा है कभी ? जाओ, अपना काम देखो ! हलवाई जी लोगों के पास कौन है ?"

बालदेव जी सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं । रामकिसून आसरम में लीडर लोग इसी तरह सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं—'ड्राइवर जी', 'ठेकेदार जी', 'हरिजन जी' !

पूछताछ के बाद मालूम हुआ, प्यारू डागडर साहेब के पास नौकरी करने आया है । रौतहट टीसन में जो हेमापोथी डागडर साहेब थे, प्यारू उनके यहाँ पाँच साल नौकरी कर चुका है । डागडर साहेब देश चले गए । सुना कि मेरीगंज में एक डागडरबाबू आ रहे हैं । सो प्यारू डागडरबाबू के पास नौकरी करने आया है ।

चूड़ा-गूड़ का जलखै[1] करके प्यारू बालदेव जी से कहता है, "डागडरबाबू का सामान कहाँ है ? टेबल-कुरसी लगाना होगा । अलमारी को झाड़ना-पोंछना होगा । पानी के ढोल के पास एक बोल[2] रखना होगा, एक साबुन और एक गमछा । डागडरबाबू आते ही पहले साबुन से हाथ धोएँगे ··· "

सचमुच प्यारू डाक्टर का पुराना नौकर है । टेबल-कुरसी ठीक से लगा दिया है । तीन पैरवाली लोहे की सीढ़ी पर पानी का ढोल रख दिया; सीढ़ी में ही लगी हुई गोल कड़ी में ललमुनियाँ[3] का कठौत बिठा दिया है । ढोल में कल लगा हुआ है । कल टीपने से पानी गिरने लगता है । बक्से से गमछा निकालकर वहीं लटका दिया है । खस्सी-बकरी की अँतड़ी का भीतरी हिस्सा जैसा रोयाँदार होता है, वैसा ही गमछा है । साबुन ? साबुन नहीं है ? अरे, कपड़ा धोनेवाला साबुन नहीं, गमकौआ साबुन चाहिए । भगत की दूकान में गमकौआ साबुन कहाँ से आवेगा ? कटिहार में मिलता है । तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है । तहसीलदार साहब कहते हैं, कमली दीदी से साबुन माँगकर ला दो ! ··· सचमुच प्यारू पुराना डागडरी नौकर है । बड़े मौके से वह आ गया, नहीं तो इतना इंतजाम कौन करता ? बेला झुक गया है, अब डागडरबाबू भी आ जाएँगे । तहसीलदार साहब कहते हैं, "भ्रुरुकुवा उगने के पहले ही बैलगाड़ियों को रवाना कर दिया है । साथ में गया है

1. जलपान । 2. कठौत । 3. अलमुनियम ।

अगमू चौकीदार ।''

सारा गाँव महक रहा है । मेले में ठीक ऐसी ही महक रहती है । तहसीलदार साहब के गुहाल में हलवाई लोग सुबह से ही पूड़ी-जिलेबी बना रहे हैं । पूड़ी बनाकर ढेर लगा दिया है । गाँव के बच्चे सुबह से ही जमा हैं । राजपूत और कायस्थों के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं जाने देते हैं—''भागो, छू जाएगा !''

सिंघ जी खुद जाकर खेलावनसिंह यादव को पकड़ लाते हैं । ''तहसीलदार देखो, इसके पेट में बाय उखड़ गया है । भोज खाने के पहले ही अन्नसर्जी हो गई है । अरे भाई, औरतों की तरह रूठने से क्या फायदा ! तुम्हीं कहो तहसीलदार, हम ठीक कहते हैं या नहीं । लड़ो-झगड़ो और फिर गले-गले मिलो । यह रूठने का क्या माने ? हमको तो बालदेव से मालूम हुआ । जाकर देखो तो कागभुसुंडी इसके कान में मंतर पढ़ रहा है । ··· ऐ बालदेव, सुनो, डागडर साहेब आएँ तो पहले इसी का इलाज कराओ । कहना कि आठवाँ महीना है ··· ।''

हा हा हा हा हा ··· हा ··· हा !

''रामकिरपाल भाई, लड़कों के सामने भी आप दिल्लगी करते हैं ? अच्छा हाथ छोड़िए । सब कोई तो हैं ही, सिर्फ हमारे नहीं रहने से कौन काम हरज हो रहा था ?''

सिंघ जी मजेदार आदमी हैं । सुबह से ही सबों को हँसा रहे हैं । खेलावन यादव रूठे थे, उसको भी पकड़ लाए । जोतखी जी नहीं आए । बोले, दाँत में दर्द है । सिंघ जी कहते हैं, ''पता नहीं उनके पेट के दाँत में दरद है शायद । सुनते हैं आजकल डागडर लोग पत्थर का नकली दाँत लगा देते हैं । डागडर साहेब से कहकर जोतखी जी का दाँत बनवा दो भाई !'' अजी, सभागाछी[1] में लड़कीवाले दाँत को हिला-डुलाकर देखते हैं थोड़ो !''

''डागडर साहेब आ रहे हैं ।''

''आ रहे हैं ? कहाँ ?''

''पछियारीटोला के पास पाँचों बैलगाड़ियाँ आ रही हैं । अगमू चौकीदार आगे-आगे दौड़ता हुआ आ रहा है । डागडर साहेब टोपा पहने हुए हैं ।''

अगमू आ गया । ''कंधे पर क्या है, बक्सा ?''

कामकाज छोड़कर सभी जमा हो गए—डाक्टर साहब आ रहे हैं ।

''हट जाइए !'' अगमू कहता है, ''डागडर साहब बोले हैं, इंतजाम से रखना ठेस नहीं लगे । बेतार का खबर है ।''

बालदेव जी कहते हैं, ''रेडी[2] है या रेडा ! अब सुनिएगा रोज बंबै-कलकत्ता का

1. विवाहार्थी मैथिलों का मेला । 2. रेडियो ।

गाना । महतमा जी का खबर, पटुआ का भाव सब आएगा इसमें । तार में ठेस लगते ही गुस्साकर बोलेगा—बेकूफ । बिना मुँह धोए पास में बैठते ही तुरत कहेगा—क्या आपने आज मुँह नहीं धोया है ?''

''जुलुम बात !''

डाकडर साहेब !

सभी हाथ जोड़कर खड़े हैं । डाक्टर साहब भी हँसते हुए हाथ जोड़ते हैं । बालदेव जी 'जाय हिंद' कहते हैं । देखादेखी कालिया भी आजकल 'जाय हिंद' कहता है । प्यारू शामियाने में कुर्सी लाकर रखता है, डाक्टर साहब के हाथ से टोप ले लेता है । डाक्टर साहब के चेहरे का रंग एकदम लाल है । 'लालटेस' ! मोंछ नहीं है क्या ? नहीं मोंछ सफाचट कटाए हैं ।

बालदेव जी हाथ जोड़कर पूछते हैं, रास्ते में कहीं तकलीफ तो नहीं हुई ? ··· सब तैयार है, भोजन कर लिया जाए । इनका नाम विश्वनाथपरसाद है, राजपारबगा के तहसीलदार हैं । इनका नाम रामकिरपालसिंघ है, सिपै ··· राजपूतटोली के मालिक हैं । इनका नाम खेलावनसिंह यादव है, यादव छत्रीटोले के 'मड़र' हैं । इनका नाम कालीचरन है, बड़ा बहादुर लौजवान है । और ये लोग 'इसकुलिया' हैं । ··· आइए बाबू साहब, आप लोग डागडर साहेब से बतियाइए । इस गाँव के महंथ साहेब ने इसपिताल होने की खुशी में गाँववालों को आज भंडारा दिया है ।

डाक्टर साहब हाथ जोड़कर सबों को फिर नमस्कार करते हैं । कहते हैं ''हम अभी नहीं खाएँगे । सबको खिलाइए !''

सचमुच प्यारू पुराना नौकर है । देखो, डागडरबाबू ने सबसे पहले साबुन से हाथ धोया ।

मठ से महंथ साहेब, कोठारिन लछमी दासिन, रामदास और दो मुरती आए हैं । महंथ साहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधु तुरही फूँकता हुआ आ रहा है । धु तु तु तु SS ··· धु तु तु ! और तुरही की आवाज सुनते ही गाँव के कुत्ते दल बाँधकर भोंकना शुरू कर देते हैं । छोटे-छोटे नवजात पिल्ले तो भोंकते-भोंकते परेशान हैं । नया-नया भोंकना सीखा है न !

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ाई जाती है । इसके बाद कोठी के जंगल की ओर दो पूड़ियाँ फेंक दी जाती हैं, जंगल के देव-देवी और भूत-पिशाच के लिए । इसके बाद साधु और बाभन भोजन ! बालदेव जी ने बहुत कहा, लेकिन डाक्टर साहब नहीं माने । प्यारू ठीक कहता था, डागडर लोग हलवाई की बनाई हुई पूड़ी-जिलेबी नहीं खाते हैं । 'कल के चूल्हे' पर प्यारू डागडरबाबू के लिए भात बना रहा है । जल्दी से बिजे[1] खत्म हो तो बेतार के खबर का गाना सुनें । क्या ?

1. खाना-पीना ।

आज गाना नहीं होगा ? हाँ भाई, कल-कब्जा की बात है । इतना जल्दी कैसे होगा ! फिर कटिहार जंकशन में रेलगाड़ियों और मिलों का अभी इतना शोरगुल होता होगा कि यहाँ तक खबर आ भी नहीं सकेगी ।''

''बिझै ! बिझै !''

''हर टोले के लोग अलग-अलग पंगत में बैठो । अपने-अपने बगल में एक फाजिल पत्ता लगा देना भाई ! अपने-अपने घर की जनाना लोगों के लिए कमबेस नहीं । ···''

गुअरटोली के रौदी बूढ़ा को सभी मिलकर चिढ़ा रहे हैं । रौदी गोप गाँव-गाँव में घूमकर दही बेचता है । उसकी चाल-चलन, उसकी बोला-बानी सबकुछ औरतों जैसी है । सिर और छाती पर से कपड़ा जरा-सा भी सरक जाने पर, औरतों की तरह लजाकर ठीक कर लेता है । मर्दों से बातें करने के समय लजाता है, औरतें उसके सामने किसी भी किस्म का परदा नहीं करतीं । हाट जाते और लौटते समय वह औरतों के झुंड में ही रहता है । ··· अभी सब मिलकर रौदी बूढ़ा को चिढ़ा रहे हैं—''तुम्हारा हिस्सा आँगन में भेज दिया जाएगा । देखो, लालचन ने तुम्हारा पत्ता लगा दिया है ।''

''दुर ! मुँहझौंसे ! बूड़े-पुराने से हँसी-दिल्लगी करते लाज नहीं आती ? हम पूछते हैं तुम लोगों से, कि तुम लोग अपनी बूढ़ी दादी और नानी से भी इसी तरह हँसी-मसखरी करते हो ? इस गाँव के लौंडे-छौंड़े बिगड़ गए हैं । और सारा दोख इसी सिंघवा का है । जहाँ बूढ़े ही बदचाल हों तो लौंडों का क्या हाल ! हम कह देते हैं, हाँ, सुन रखो ! हाँ । ···''

महंथ साहब रात में भोजन नहीं करते हैं ।

''सतगुरु हो ! डागडर साहेब, आपको कितना मुसहरा मिलता है ? दो सौ ? ··· हाँ, यहाँ ऊपरी आमदनी भी होगी । असल आमदनी तो ऊपरी आमदनी है । ··· बहुत अच्छा हुआ । ··· गाँधी जी तो अवतारी पुरुख हैं ।—डागडर साहेब ! आज से करीब पाँच साल पहले एक बार हमारी आँखें आईं, उसके बाद दो महीने तक आँखों में लाली छाई रही । पुरनियाँ के सिविलसार्जन साहेब को पचास रुपया फीस देकर दिखलाया । बहुत दिनों तक इलाज भी करवाया । मगर बेकार । अब तो आप आ गए हैं । अपने घर के डागडर हुए ! ···''

लछमी दासिन टकटकी लगाकर डाक्टर साहब को देख रही है । ··· कितना सुंदर पुरुष है ! बेचारे का इस देहात में मन नहीं लग रहा है । नौकरी कोई भी हो, आखिर नौकरी ही है । मन घर पर टँगा हुआ होगा । बीवी-बच्चों की याद आती होगी । ··· कुछ दिनों में मन लग जाएगा । फिर बाल-बच्चों को भी ले आवेंगे । अचानक वह पूछ बैठती है, ''आपके घर पर और कौन-कौन हैं डाक्टरबाबू ?''

''जी,'' डाक्टर ने जरा हकलाते हुए कहा, ''जी, मेरा कोई नहीं । माँ-बाप

बचपन में ही गुजर गए ।''

लछमी समझ लेती है कि यह सवाल पूछना उचित नहीं हुआ । उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा प्रश्न किया ही क्यों ! ··· मेरा कोई नहीं !

''लछमी ! रामदास को बुलाओ । अच्छा तो डागडरबाबू, अब आज्ञा दीजिए । आप भी भोजन करके आराम कीजिए । कभी मठ की ओर भी आइएगा । सतगुरु साहेब कहीन हैं—'दरस-परस सतसंग ते छूटे मन का मैल' ।''

लछमी हाथ जोड़कर नमस्कार करती है ।

ब्राह्मणटोली के लोग बालदेव जी से पूछते हैं, ''डागडरबाबू का नौकर तो दुसाध है । और डागडरबाबू कौन जात हैं ? दुसाध का बनाया हुआ खाते हैं ?''

बोलिए प्रेम से ··· महतमा गन्ही की जै !

भंडारा समाप्त हो गया । कोई 'तरुटी' नहीं हुई । सबको 'पूर्ण' हो गया । जो भूल-चूक से छूट गए हैं, उनका हिस्सा कल ले जाइएगा ।

बालदेव जी अगमू चौकीदार और बिरंची के साथ इसपिताल में ही सोएँगे । आज पहली रात है !

आठ

लछमी का भी इस संसार में कोई नहीं !

··· जी, मेरा कोई नहीं ! ··· लछमी सोचती है, उसका दिल इतना नरम क्यों है ? क्यों वह डाक्टर को देखकर पिघल गई ? यह अच्छी बात नहीं । ··· सतगुरु मुझे बल दो ।

सतगुरु के सिवा कोई और भी उसका नहीं । माँ की याद नहीं आती । पसराहा मठ के पास अपनी झोंपड़ी की याद आती है । सुबह होते ही बाबू जी कंधे पर चढ़ाकर मठ ले जाते थे । महंथ रामगुसाईं कितना प्यार करते थे—'आ गई लच्छो ! ले, मिसरी खाएगी ? चाह पीएगी ?' भंडारी एक कटोरे में चाहचूड़ा दे जाता था । बाबू जी बैठकर महंथ साहेब के लिए गाँजा तैयार करते थे । एक चिलम, दो चिलम, तीन चिलम ! पीते-पीते महंथ साहेब की आँखें लाल हो जाती थीं । कभी-कभी बाबूजी भी थर-थर काँपने लगते थे । भंडारी दही लाकर देता था—'खा लो रामचरन भाई ! नशा टूट जाएगा ।' बाबू जी को महंथ साहेब बहुत मानते थे । कोई काम नहीं । दिन-भर महंथ साहेब की धूनी के पास बैठे रहो, गाँजा तैयार करो, चिलम चढ़ाओ । मठ पर ही हमारा खाना-पीना होता था ।